आगरा घराने की विशेषताएं : एक अध्ययन

Sudhakar Bandu Manwar
Reg. No.-28719039
Research Scholar
Department of Music
Shri JJTU University
Vidyanagari, Jhunjhunu
Rajastan 333010
Email ID-manwar.sudhakar1018@gmail.com

Dr Ranjana Saxena
Reg No.- JJT/2K9SSH/1852
Associate Professor
HOD Department of Music
Shri JJT University
Vidyanagari, Jhunjhunu
Rajasthan 333010
Email ID - ranjanasaxena223@gmail.com

सार : संगीत की जागृति में परम्परागत संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक हिन्दुस्तानी संगीत का जब भी जीक्र होता है तो उसकी महान परम्परा को कभी भी भूलाया नहीं जा सकता। क्योंकि परम्परा ही प्राचीन संगीत को आधुनिक संगीत से जोडती है और विभाजित करती है। अनेक वर्षो की परम्परा उच्चकोटि के गुरु और कई पीढियों की शिष्य परम्परा इनके सहयोग और प्रयासों से ही कोई भी घराना जन्म लेता है। घराने जहां परम्परा के प्रतीक होते है, वहां परम्परागत संगीत के प्रतिनिधि भी होते है। वे परम्परा की निरंतरता के रुप होते है। प्राचीन शास्त्रीय संगीत का अनुवाद भी इन घरानों के व्दारा ही हुआ है, यही घराने परम्परा का निर्माण करते है तथा उसको सजीव बनाते है। प्रो. मुटाटकर सुमति ने परम्परा के बारे में अपना मत प्रकट करते हुए कहा है कि, जो कुछ भी हमारे पूर्व निर्माण हुआ है, अथवा वैचारिक चिंतन हुआ है, वह एक से दूसरी पिढी तक जीस प्रकार से पहुंचाया जाता है उसे ही परम्परा के नाम से जाना जाता है। प्रस्तुत उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के आगरा घराने की गायकी की विशेषताओं का अध्ययन कीया गया है।

की वर्ड्स : आगरा घराना, गायकी, परम्परा, लयकारी, बंदिश।

प्रस्तावना : संगीत में घरानों की परम्परा और गायकी की विशेषता एक बडा ही आकर्षण का विषय रहा है। हिन्दुस्तानी संगीत की रागदारी की बंदिश कोई जड चीज नही है, जो हर समय हर लय में एक सी ही रहें। लय का मिजाज देखकर बंदिश के बंदिशपन को बराबर सम्हाल कर, चीज के बोल के वजन को तोल मोल कर गायक चीज पेश करता है और हर समय इसका स्वरांकन में कही न कहीं थोडा अन्तर भी हुआ करता है। चीज के शब्दो के सम्बन्ध में क्वचित स्वरांकन और राग नाम के बारे में पाठान्तर जरुर प्राप्त होगा। सभी पाठान्तर या मतभेद का निर्देश करना आवश्यक है। तो भी विभाग दूसरे के सन्दर्भ में निम्न विवेचना के प्रति सब गुणिजनों का ध्यान प्रार्थनीय है। ख्याल की चीजों में सामान्यतः दूसरा अन्तरा नही होता या गाया नही जाता, कुछ अपवाद भी पाया जाता है जैसे, 'मै वारी वारी जाउंगी' इसमे प्राणपिया की मोहर भी है। राग केदार की बंदिश, 'सजे निस नींद न आते' खां तस्ददुक हुसैन खां, विनोदपिया की बिहाग की बंदिश, 'बार–बार समझाय रही' इसमें अन्तरे मे प नि ध सां है, इसको प नि नि सां बना कर शुध्द नही किया गया। संगीत जैसी कला की पूर्णता इसकी प्रत्यक्ष किया में देखी जाती है और प्रत्यक्ष क्रिया को ही संगीत की तालीम कहते है। उस्ताद, शागिर्द को सम्मुख बिठाकर शिक्षा देता है इसको सीना ब सीना तालीम कहा जाता है।

तालीम के विषय में हमारे खानदान में जो सिलसिला चला आ रहा है उसमें शुरु से ही तानपूरा छेडना जरुरी है। सुबह में प्रथम मध्य सप्तक का सा से आरम्भ होता है और वारोह अवरोह की मेहनत से गला तैयार किया जाता है। इसी से ही स्वरज्ञान भी दिया जाता है, ताल और लय का ज्ञान भी दिया जाता है, सुबह की तालीम में भैरव राग की सरगम प्रथम सिखाते है। करींब दो तीन वर्ष तक सरगम प्रथम सिखाते है। इसमे सरगम, गीत, ध्रुपद, ख्याल, छोटा ख्याल, तराना और धमार की तालीम की जाती है। इस तरह हर घराने के गायक अपनी सन्तानों को और दूसरे शर्गिदों को शिक्षा देते है।

गायकी विद्या के घराने में प्रत्येक घरानों कि कुछ विशेषताएं है। आगरा घराना ने विशिष्ट प्रकार का स्थान प्राप्त किया है। इस घराने की गायकी बुजर्गों ने फैयाज खां, खां विलायत हुसेन खां साहब ने और रिश्तेदारों ने और भी घराने के कई शगिर्दो मे तैयार की है।

वर्तमान समय में जो संगीत प्रणालियां प्रचलित है उनमें आगरा घराने का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दुस्तानी संगीत में गायन व वादन के कई घराने है जिनमें हर एक का अपना ही रंग है, अपनी अलग विशेषताएं है। इन सभी घरानों में आगरा घराने का विशिष्ट स्थान है। जैसे–जैसे घरानों की परम्परा उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर सुदृढ़ रुप से प्रशस्त होती चली जाती है, वैसे–वैसे प्रत्येक संगीत साधक या शिष्य का लक्ष्य इस ओर केन्द्रित होना एकदम लाजीम है कि, संगीत और राग एक ही है। उस्ताद या गुरुओं की वंशावलियां देखने से समझ आता है कि, किसी एक गुरु का पुत्र कोई दत्तक पुत्र तथा कोई शिष्य होता है, तो ऐसी स्थिति में घरानों घरानों को विलग करना और उन घरानों की विशेषताओं का प्रदर्शन करना बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। लेकीन आज तक घरानों की शैलीगत परम्परा में प्रत्येक घराने ने ज्यो अपनी अनोखी छाप छोडी है, उन्हीं विशेषताओं की वजह से एक घराना दुसरे से भिन्न दिखाई देता है। कुछ ऐसी विशेषताएं होती है जो प्रत्येक घराने में दृष्टिगोचर होती है, जैसे रागों के नाम, उनके स्वर, आलापे, बेहलावा और भिन्न–भिन्न प्रकार की लयकारियां इन सभी का प्रस्तुतिकरण आदि, और ये सारी चिजें एक घराने को दुसरे से पृथक करने में प्रमुखता से कारणीभूत सिद्ध होती है। यही विशेषताएं खास कर आगरा घराने में है। प्राचीन काल में ध्रुपद की चार बानियां प्रसिध्द थी। इन बानियों में से नौहार बानी के संस्थापक हाजी सुजान खां थे। यहां नौहार वाणी करीब सौ वर्ष बाद आगरा 'घराना' नाम से सर्वविदित हुई।

शोध प्रविधी :

प्रस्तुत शोध हेतू वर्णनात्मक शोध प्रविधी का उपयोग किया गया है। इसमे आगरा घराने के गायकी की विशेषताओं के संदर्भत मे प्रकाशित विविध साहित्य का अध्ययन करके उसमें से कुछ चुनिंदा विशेषताओं का विश्लेषण आगरा घराने की प्रारंभिक गायकी के तत्त्वों के आधार पर किया गया है।

आगरा घराने की गायकी की विशेषताओं का विश्लेषण :

आगरा घराना जिस से ध्रुपद शैली के सैध्दान्तिक आधार को ख्याल परम्परा मे मान्यता देते हूए दोनों के उचित समन्वय से एक विशेष प्रकार की आकर्षक गायकी को प्रतिष्ठित किया, आगरा घराना के नाम से प्रसिध्द है। इस घराने की स्थापना का श्रेय अकबर युग के हाजी सुजान खां को जाता है। तानसेन के समकालीन तथा दीपक ज्योति की उपाधि से विभूषित हाजी सुजान खां ध्रुपद धमार गायकी के प्रकाण्ड विव्दान थे। इन्ही के वंश मे श्याम रंग व सरस रंग नाम के दो भाई हूए, जो कि नौहार बानी के ध्रुपद के माने हुए विशेषज्ञ थे। इन्ही में से एक भाई श्याम रंग के सबसे छोटे पुत्र घग्घे खुदाबख्श ने ख्याल गायकी की तालीम ग्वालियर घराने के नत्थन पीरबख्श ईनसे प्राप्त की। इसी कारण आगरा घराने की गायकी में जहां एक ओर ध्रुपद धमार की गम्भीरता है वही दूसरी ओर ग्वालियर घराने के कुछ तत्व भी सन्निहित है। घग्घे खुदाबख्श व्दारा प्रचलित ख्याल परम्परा को आगे बढाने का कार्य उनके दो पुत्र गुलाम अब्बास खां व कल्लन खां ने किया। कल्लन खां ने अपने पुत्र तसद्दूक हुसैन खां को भी इस घराने की गायकी में प्रवीण बनाया। गुलाम अब्बास खां की एक पुत्री थी जिसका विवाह रंगीले घराने के साफदर हुसैन खां से हुआ। इनके पुत्र फैयाज खां अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण सर्वदूर परिचित थे।

इस घराने की गायकी में स्वरों के लगाव का एक विशेष ढंग है। रागों की शास्त्रीय शुध्दता और उनकी परम्परागतता सच्ची व्याख्या है। इस घरानें में गायकी के सौंदर्यबोध पर अधिक महत्व देते है एवं गायक और श्रोताओं के बीच भावनात्मक विनिमय होता है। गायक के गायन में व्यक्तित्व की छाप होती है, अपना गायन प्रस्तुत करने में गायक सक्रिय चेष्टा करता है, कि

ख्याल को किस प्रकार तकनीकी रुप से एवं सौन्दर्यात्मक रुप से भरा जाए। गायक भलीभांति जानकर उस विशिष्ट स्वरुप को अपने गायकी में प्रयोग करता है। वह स्पष्ट रुप से एवं स्वाभाविक रुप से बढत फिरत व्दारा गायकी को भरना जानता है। लय का अधिक विलम्बित न होना और मध्य लय से अधिक सैल ना होना, इसी वजह से गायकी में आनंद आता है। तान, लय, भाव, का पूरा आनन्द आता है। प्रायः एक सुरीली आवाज वाला गायक संवेगात्मक भावुकता का- सहारा लेकर श्रोताओं को खुश कर लेता है। इनकी गायकी में स्वरों का उच्चारण स्पष्ट एवं भावुक होता है, ये अपने हर गायकी से निराला होता है। इस गायकी के आकार का आलाप तथा बोल आलाप दोनों ही रुप से राग का विस्तार होता है। आगरा घराने की गायकी में एक बात और है कि अपने गायन में बढंत करते समय गायक अपने शब्दों का उच्चारण रचनात्मक और अधिक कलात्मक ढंग से करता है। आगरा घराने की गायकी में ये निरालापन है।

आगरा घराने में विभिन्न प्रकार की तानों व्दारा वीरता का भी प्रदर्शन होता है। इस घराने में कुछ ताने बडे बलपूर्वक गमक तथा जबडे के प्रयोग से गायी जाती है।

उस्ताद फैयाज खां के लिए लोग कहा करते थे कि लय उनकी गुलाम थी और वह ताल के बादशाह थे। यह बिलकुल ठीक था। घराने के अच्छे गायकों मे भी कभी कभी ये गुण दिखाई देता है। जैसे इस घराने की बोलतानें बडी सुन्दरता से सजाई जाती है, शब्दों को इस कलात्मक और भाऊक ढंग से कहा जाता है कि वह ताल की मात्राओं में नपे तुले चले आते है। सबसे बडी बात ये थी, के स्थाई के शब्दों को इस ढंग से कहा जाता है कि रचना की पहली पंक्ति में प्रतिक्षा का भाव होता है और सम सामने दिखाई देती है, परन्तु गायक ताल की मात्राओं को गिनकर ऐसा नही करता, ताल उसके चित्त और मन में जम जाती है और वह जहां से चाहता है सम पर आ जाता है। इस प्रकार का गहरा लय ज्ञान गायक के मस्तिष्क में समा जाता है, उसे गिनना नही पडता अर्थात अपने आप लय बांट बनती जाती है।

आगरा घराने की गायकी में लय बांट का रंग बडा आकर्षणपूर्ण रहा है एवं ख्याल के गायन में होरी के पश्चात धमार का गायन इस घराने की परम्परा में विशेष स्थान रखता है। होरी से तात्पर्य यह है कि कृष्ण कन्हैया, राधा या गोपियां, अबीर गुलाल इत्यादी आम तौर पर इसी तरह के पद होते है। होरी में मृदंग, पखवाज आदि का प्रयोग होता है।

ख्याल में बोल आलाप, बोलतान, आकार, इकार, बोल बांट स्वरोच्चार में बल आदि का समावेश होता है। आगरा गायकी ने इसका बहुत सफल रुप से प्रयोग किया है। उत्साह, जोश, बल, पौरुष आगरा गायकी के सहचारी अंग स्वभाव बन गए है। कभी कभी इस घराने में गायक धमार के बाद तराना गाकर गायन की समाप्ति करते है।

आगरा घराने की गायकी में ताने लय की देखरेख, चौगुन आठगुन इत्यादि लय को तानें बडे पल्ले की तानें, जबडे की तानें, गमक की तानें, सपाट तानें तथा बोल की फिरत भी आती है। जिस प्रकार स्वर व आलाप प्रधान गायकी यह किराना घराने की खासियत है, उसी प्रकार लय प्रधान गायकी यह आगरा घराने की खासियत है। गायकी के दृष्टि से देखा जाए तो आगरा घराने की परम्परा धृपद धमार के अंग की थी और इस घराने में नोहार बानी प्रमुख मानी गई, क्योंकि आगरा घराने के मूल पुरुष हाजी सुजान खां धृपद और धमार बहुत अच्छा गाते थे। घग्घे खुदाबख्श ने इस घराने में ख्याल गायन का प्रवेश कराया, लेकिन इसी के साथ धृपद विधा का गायन और अध्ययन भी किया। कोई भी घराने के लिए ख्याल और धृपद धमार यह दोनों शैलियों की एक साथ तालिम यह कोई नई बात नही है, ख्याल के प्रत्येक घराने में धृपद, धमार की कुछ ना कुछ शिक्षा अवश्य दी जाती है। इसी वजह से कहा जा सकता है कि आगरा घराना दोनों शैलियों के गायन को महत्व देता रहा।

आवाज लगाने का ढंग : आगरा घराने मे आवाज मे भारीपन और गरिमा पर बहुत बल दिया जाता है। गायन की दृष्टि से आवाज या स्वर में वजन, जवारी, गुंजन, गोलाई, पैनापन इत्यादि सभी पहलुओं का विकास होना अवश्यभावी है। पाश्चात्य तरीके की आवाज साधना के जरिए आवाज निर्दोश लचीली और खुली बन जाती है। आवाज में वजन, जवारी और गुंजन का

विशेष महत्व है। इन तीनों गुणो को विकसित कर लेने से गायक की आवाज गायन के लिए योग्य बनती है। इसका मतलब यह नही कि हर गायन प्रकार में या विभिन्न मनोभावों की अभिव्यक्ति में इन तीनों का ही समान रुप से प्रयोग किया जाए। संगीत की अभिव्यक्ति मे तो सहजता को परम सिध्दी का द्योतक माना जाता है। आगरा घराने मे इस गुण को शिरोधार्य माना हो, तो कोई आश्चर्य नही। किन्तु इस सहजता के साथ ही यह घराना अनुपातिकता, शानदारपन सुरीलापन और परिमितता को भी प्राधान्य देता है। इस परिमितता या नपेतुलेपन के बिना सहजता में आनुपातिकता का गुण नही आ सकता। इसलिए ख्याल गायन जिस ताल में प्रस्तुत किया जाता है उस ताल पर गायक का प्रभुत्व होना आवश्यक है। सम पर आना सम सांगीतिक आवर्तन का चरम उत्कट बिंदु होता है, जिसकी पूर्ति बंदिश के मुखडे को पकडकर सम पर शान से अवतरित होने में होती है। कुशल कवि प्रत्येक कडी की आखिर में श्रोताओं को धृपद या टेक पर ला छोडता है। उसके पहले पाठक या श्रोता को उस टेक की आहट मिल जाती है। संगीत मे इस प्रकार की आगमन की पूर्व सूचना देने की किया को आमद कहते है। आमद को साधने में कलात्मकता छिपी रहती है। यह तो स्पष्ट है कि ताल पर प्रभुत्व के बिना आमद को साधना संभव नही। आगरा घराने मे इस प्रकार के तालप्रभुत्व को असाधारण महत्व दिया जाता है।

आगरा घराने की गायकों में आवाज़ का खुला खुला प्रयोग किया जाता है। विव्दानों ने प्रत्येक घराने की शैली का अनोखापन बताने के लिए घराने के प्रमुख गायक की आवाज़ को और उसके आवाज़ लगाने के ढंग को प्रमुख स्थान दिया है। आगरा घराने में आवाज को लगाने की पध्दति थोडी अनुनासिक, खुले स्वर, जबडे की पेंचदार तान, इन सभी से युक्त है। इस घराने के गायकों की आवाज खुली और जोरदार होती है। आवाज को दबाकर गाना या आवाज में कृत्रिमता दिखाना अर्थात अपनी प्राकृतिक आवाज को दबा कर एक दूसरी ही आवाज में गाना, आदि इस घराने के गायकों के लिए दोषपूर्ण बातें मानी जाती है।

गायकी में बिना किसी बनावटी प्रकार से सभी हरकतों और तरकीबों का प्रदर्शन किया जाता है, जैसे अपनी गायकी में हर एक हरकत स्पष्ट रुप से सुनाई दे और साथ ही साथ स्वर साधना के भी सभी सिध्दांतो का पूर्णतया पालन हो।

आगरा घराने की साधना बहुत अधिक परिश्रम पूर्ण होने की वजह से कम ऊंचाई वाले स्वर और मंद्र सप्तक की सारी हरकतें स्पष्ट रुप से सुनाई देती है। गायक जब निबध्द रुप से गायन आरम्भ करते है, तो सबसे पहले नोमतोम की आलापी की जाती है। ज्यादातर करीब सभी आगरा घराने की गायकी गाने वाले गायकों के शब्द उच्चारण साधारण तथा एक साथ होते हे। वे नोम तोम के री, तन, नन, इन शब्दों का उच्चारण री, दे, ने, के रुप में करते है।

धृपद धमार जैसी मर्दानी गायकी के संस्कार आगरा घराने की गायकी में स्पष्ट रुप से दिखाई देते है, इसीलिए इस गायकी को गाने वाले गायकों की आवाज में प्राकृतिक गंभीरता तथा जोरदार वजन दिखाई देता है। इसी वजह से हम यह मान सकते है कि आगरा घराने की गायकी के उच्चारण में एक वैचित्र्यपूर्ण भाव दिखाई देता है। आवाज लगाने की दृष्टि से आगरा घराना अपना विशेषत्व रखता है।

राग–विस्तार अंग : राग की शुध्दता तथा सच्ची व्याख्या यह भी आगरा घराने की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इस में गायक राग में सौंदर्यता के साथ साथ उसके सिध्दांतो का पालन कुशलतापूर्वक करता है। इस घराने में रागों की केवल कोरी शास्त्रीय शुध्दता ही नही होती बल्कि रागों में भावात्मकता तथा रसात्मकता को विशेष स्थान प्राप्त है। इस गायकी में राग का विस्तार दोनों ढंग से होता है। एक तो आ–कार व्दारा और दूसरा बोल आलाप व्दारा। राग रुपहीन होता है और चीज या बंदिश की वजह से वह मूर्तिमंत होता है। चीज की बढंत राग की बढंत होती है। चीज की बढंत के सहारे राग की बढंत होती है। इसमे सर्वप्रथम गाये जाने वाले राग का प्रारम्भिक आलाप किया जाता है जिससे राग की पहचान हो सके। उपरान्त ख्याल की स्थाई और अंतरा पूर्ण रुप से गाया जाता है, फिर बोलआलाप अर्थात बंदिश के बोलो व्दारा राग की बढंत की

जाती है, उसके बाद बोलबांट, बोलतान आदि चीजों का प्रयोग होता है। इस गायकी में नोम तोम करना यह बहुत ही कलात्मक प्रकार होता है। नोम तोम करते वक्त बढंत युक्त क्रम, विभिन्न आकर्षक प्रबंध, उसकी विभिन्न लयकारियां, शब्दों की उचित संयोजना आदि बातें इतनी मुश्किल है कि इनके आगे ख्याल गायकी आसान लगती है। आगरा घराने में रागों में प्रयुक्त स्वर श्रुति स्थान खासकर कोमल स्वरों के श्रुति स्थान कुछ चढ़े हुए या उंचे प्रतीत होते है। इस घराने में, प्रचलित रागों के साथ साथ अप्रचलित रागों का गायन भी होता है और मुश्किल रागों को भी आगरा घराने की गायकी में बखूबी गाया जाता है।

बंदिश की विशेषता : आगरा घराने की बंदिशे ज्यादातर मध्य लय की होती है, इस घराने में ख्याल की लय को अति विलंबित से प्रारम्भ करके उसे चौगुन, आठगुन, आड तथा फिरत आदि करके लयबध्द तानों और बोलतानों का प्रयोग किया जाता है। अर्थात इस घराने की बंदिश स्वर और ताल की दृष्टि से अत्यंत सुगठित होती है। इस घराने की बंदिशो में रचना के शब्दों का स्पष्ट और भावपूर्ण उच्चारण करते है। जिस प्रकार के बोल होंगे उसी प्रकार के रस के अनुसार राग की बढंत की जाती है। आजकल गाई जाने वाली जीतनी भी विलम्बित ख्यालें और अति विलम्बित लय की ख्याले होती है वह आगरा घराने के नत्थन खां साहब की ही देन है, जिसे सभी घराने वाले मानते है। इस घराने के कुशल गायक रागों में प्रयुक्त बंदिशों को विविध आभूषणों, जैसे स्वर का लगाव, उसमें संगीतमय भावुकता, बेहलावा, बोलबांट, लयकारी आदि से सजाते है। स्वर और ताल का अभूतपूर्व सामंजस्य इस घराने की गायकी में दृष्टिगोचर होता है। इस घराने के गायक ताल में एकदम पक्के होते है और किसी भी चोटी के तबलिए के साथ गाना गाने के लिए सक्षम होते है, उनकी ताल पर बहुत अधिक पकड होती है।

निष्कर्ष : अन्त में कहा जा सकता है कि आगरा घराने की गायकी भारतीय संगीत के सिध्दान्तों का अनुसरण करती है तथा इसमें राग की शुध्दता, कलात्मकता, स्वर–लय का उपयुक्त निर्वाह, आलाप, बेहलावा, बोलबांट, बोलतान, आकर्षक बंदिश, मींड, गमक का प्रयोग आदि सभी तत्वों का सम्मिश्रण है। अतः यह अपने आप में सम्पूर्ण गायकी है। अपनी विशिष्ट गायकी के कारण ही समस्त घरानों मे आगरा घराने को महत्वपूर्ण एवं गौरवशाली स्थान प्राप्त है।

सदर्भ ग्रन्थ सूची :

- देशपाण्डे वामन हरी (1973), ***घरानेदार गायकी,*** नयी दिल्ली : राजकमल प्रकाशन प्रा. लिमिटेड आय.एस.बी.एन. 978–93–89577–88–4 ।
- महाले यशवंतबुवा, ***आगरा घराना परम्परा और बंदिशे,*** नई दिल्ली : संस्कार पब्लिकेशन्स, आय.एस.बी.एन. 97–81–939702–5–6 ।
- वीना विश्वरुप, ***आगरा घराना,*** खैरागढ : इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
- चौबे सुशील कुमार, ***संगीत में घरानों की चर्चा*** लखनउ : मानव संसाधन विकास मंत्रालय
- आचरेकर बा. ग. (1974), ***भारतीय संगीत व संगीतशास्त्र,*** मुंबई : महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृति मंडळ सचिवालय
- उस्ताद विलायत हुसैन खाँ, (1969), ***संगीतज्ञों के संस्मरण,*** प्रथम संस्करण, नई दिल्ली : संगीत नाटक अकादमी
- खां उस्ताद अलाउद्दीन, (1982), ***उस्ताद रजब अली खां–अमीक हनफी,*** भोपाल : संगीत अकादमी